## अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल का 35वां वार्षिक अधिवेशन

# संगठन में अनुशासन आवश्यक : आचार्य महाश्रमण

**सरदारशहर 1 अक्टूबर, 2010**

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि संगठन हो या लोकतांत्रिक देश सब जगह अनुशासन आवश्यक है। जहां स्वछंदता फैल जाती है वहां खतरा पैदा हो जाता है। अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा के अभाव में विकास का देवता भी रूठ जाता है।

उक्त विचार उन्होंने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के 35वें वार्षिक अधिवेशन में देश की 355 शाखा परिषदों से पहुंची महिला शक्ति को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उल्लेखनीय है कि इन शाखा परिषदों से जुड़ी हुई 55 हजार महिला कार्यकर्त्ताएं मण्डल की विभिन्न गतिविधियों में अपने श्रम का नियोजन करती है। मण्डल ने 'आओ चलें गांव की ओर, आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना, कन्याओं की करो सुरक्षा...' आदि गतिविधियों से ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा, चिकित्सा, संस्कार निर्माण के प्रति जागरूकता फैलाई है और कन्या भ्रूण हत्या निषेध के 2.40 लाख फार्म भरकर कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में आवाज को बुलंद किया है। मण्डल ने जहां एक ओर सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं को सशक्त करने का कार्य किया है तो वहीं आध्यात्म के क्षेत्र में ज्ञानाराधना के माध्यम से तत्त्वज्ञान, चौबीसी एवं 12 व्रतों को स्वीकार कराने में भी महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

आचार्य महाश्रमण ने महिलाओं की तत्त्वज्ञान में बड़ी रूचि की सरहाना करते हुए कहा कि तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में बहिनें काफी अच्छा अध्ययन कर रही है। एक समय था जब इस ओर कमी महसूस होने लग गई थी पर अब ऐसा लगता है यह कमी अगले कुछ ही वर्षों में पूरी हो जायेगी। उन्होंने कहा कि महिलाएं, ज्ञानाराधना करती है, यह प्रशंसनीय है। इसके साथ ही ज्ञान का पुनरावर्तन भी होता रहना चाहिए। पुनरावर्तन होने पर ही ज्ञान स्थाई हो सकता है। आचार्य महाश्रमण ने 'आओ निखारें श्रावकाचार' विषय पर कहा कि त्याग संयम का विकास श्रावकाचार में निखार लाता है। 12 व्रतों को स्वीकार कर लो श्रावकत्व में निखार आ जायेगा। उन्होंने इस मौके पर नशा मुक्ति एवं समय-समय पर रात्री भोजन परिहार रखने की भी प्रेरणा दी।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि किसी भी संस्था के वार्षिक अधिवेशन का प्रारंभ नये वर्ष का प्रारंभ होता है। नया वर्ष नई उज़्मीदें, नये संकल्पों के साथ शुरू होता है। यह समय सपनों को, हसरतों को हकीकत में बदलने का समय है। आपने वर्षभर में जो काम किया है उसकी समीक्षा करनी है, आगामी वर्ष के कार्यक्रमों की योजना तैयार करनी है। उन्होंने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण का मंगल सान्निध्य श्रावकाचार में निखार लायेगा।

श्रावक को तीन बिन्दुओं पर ध्यान देने की जरूरत है। हम यह सोचें कि हमारा आत्मबल घटा या बढ़ा है। श्रद्धा बल में कमी आई है या बढ़ी है। चरित्र बल का विकास हुआ है या नहीं। इन तीनों बलों में विकास होने पर श्रावकाचार में निखार आयेगा।

मुज़्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने भी अधिवेशन को संबोधित किया। मुज़्य वक्ता डॉ. मंजु नाहटा ने श्रावकत्व के संदर्भ में विशद जानकारी प्रस्तुत की। मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती कनक बरमेचा ने आगंतुकों का स्वागत एवं अधिवेशन के शुभारंभ की विधिवत घोषणा की। मण्डल की प्रधान ट्रस्टी सुशीला पटावरी ने महिला कार्यकर्त्ताओं को उपसंपदा दिलाई। स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल अध्यक्षा सूरज बरड़िया ने मेजबानी करते हुए स्वागत भाषण दिया। कार्य समिति की बहिनों ने मंगलाचरण किया। संचालन महामंत्री वीणा बैद ने किया। इस अधिवेशन के प्रायोजक मूलचन्द मालू, सुमतिचन्द गोठी एवं बिमलकुमार नाहटा हैं।

---

**जैन रामायण कृति का लोकार्पण**

## जैन रामायण सूक्तों का ज़्ण्डार है : आचार्य महाश्रमण

**सरदारशहर 1 अक्टूबर, 2010**

आचार्य महाश्रमण ने अपने प्रथम गुरु आचार्य भिक्षु द्वारा संशोधित प्राचीन जैन रामायण की कृति का लोकार्पण आज अधिवेशन के अवसर पर किया। कृति को लोकार्पण हेतु अधिवेशन के प्रायोजक उद्योगपति मूलचन्द मालू ने आचार्य प्रवर को भेंट की। आचार्य महाश्रमण ने इस सन्दर्भ में कहा कि भगवान राम भारत के श्रद्धेय एवं महापुरुष हैं उनके जीवन को ग्रंथित करने वाली जैन रामायण वैदुष्यपूर्ण ग्रंथ है। इस मौके पर विजयादेवी मालू ने प्रस्तुत कृति को साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा मुज़्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा को भेंट की।

*– **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)*